

रविवार 18 अगस्त, 2024

विषय — आत्मा

स्वर्ण पाठ: यशायाह 26 : 8

"हे यहोवा, तेरे न्याय के मार्ग में हम लोग तेरी बाट जोहते आए हैं; तेरे नाम के स्मरण की हमारे प्राणों में लालसा बनी रहती है।"

उत्तरदायी अध्ययन:

भजन संहिता 62, 1

इब्रानियों 4: 7, 12, 16

इब्रानियों 6: 19

- 1 सचमुच मैं चुपचाप होकर परमेश्वर की ओर मन लगाए हूं; मेरा उद्धार उसी से होता है।
- 7 यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मनों को कठोर न करो।
- 12 क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।
- 16 इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे॥
- 19 वह आशा हमारे प्राण के लिये ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है, और परदे के भीतर तक पहुंचता है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यशायाह 55: 1-3, 6

- 1 अहो सब प्यासे लोगो, पानी के पास आओ; और जिनके पास रूपया न हो, तुम भी आकर मोल लो और खाओ! दाखमधु और दूध बिन रूपए और बिना दाम ही आकर ले लो।
- 2 जो भोजनवस्तु नहीं है, उसके लिये तुम क्यों रूपया लगाते हो, और, जिस से पेट नहीं भरता उसके लिये क्यों परिश्रम करते हो? मेरी ओर मन लगाकर सुनो, तब उत्तम वस्तुएं खाने पाओगे और चिकनी चिकनी वस्तुएं खाकर सन्तुष्ट हो जाओगे।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 3 कान लगाओ, और मेरे पास आओ; सुनो, तब तुम जीवित रहोगे; और मैं तुम्हारे साथ सदा की वाचा बान्धूंगा अर्थात् दाऊद पर की अटल करूणा की वाचा।
- 6 जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो।

2. मरकुस 8: 1, 2, 4-9 (सं:), 27-29, 31-33, 34 (जो कोई भी)-36

- 1 उन दिनों में, जब फिर बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई, और उन के पास कुछ खाने को न था, तो उस ने अपने चेलों को पास बुलाकर उन से कहा।
- 2 मुझे इस भीड़ पर तरस आता है, क्योंकि यह तीन दिन से बराबर मेरे साथ हैं, और उन के पास कुछ भी खाने को नहीं।
- 4 उसके चेलों ने उस को उत्तर दिया, कि यहां जंगल में इतनी रोटी कोई कहां से लाए कि ये तृप्त हों?
- 5 उस ने उन से पूछा; तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं? उन्होंने कहा, सात।
- 6 तब उस ने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी, और वे सात रोटियां लीं, और धन्यवाद करके तोड़ीं, और अपने चेलों को देता गया कि उन के आगे रखें, और उन्होंने लोगों के आगे परोस दिया
- 7 उन के पास थोड़ी सी छोटी मछलियां भी थीं; और उसने धन्यवाद करके उन्हें भी लोगों के आगे रखने की आज्ञा दी।
- 8 सो वे खाकर तृप्त हो गए और शेष टुकड़ों के सात टोकरे भरकर उठाए।
- 9 और लोग चार हजार के लगभग थे।
- 27 यीशु और उसके चले कैसरिया फिलिप्पी के गावों में चले गए: और मार्ग में उस ने अपने चेलों से पूछा कि लोग मुझे क्या कहते हैं?
- 28 उन्होंने उत्तर दिया, कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला; पर कोई कोई एलिय्याह; और कोई कोई भविष्यद्वक्ताओं में से एक भी कहते हैं।
- 29 उस ने उन से पूछा; परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो पतरस ने उस को उत्तर दिया; तू मसीह है।
- 31 और वह उन्हें सिखाने लगा, कि मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि वह बहुत दुख उठाए, और पुरिनए और महायाजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें और वह तीन दिन के बाद जी उठे।
- 32 उस ने यह बात उन से साफ साफ कह दी: इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगा।
- 33 परन्तु उस ने फिरकर, और अपने चेलों की ओर देखकर पतरस को झिड़क कर कहा; कि हे शैतान, मेरे साम्हने से दूर हो; क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परन्तु मनुष्य की बातों पर मन लगाता है।
- 34 उस ने भीड़ को अपने चेलों समेत पास बुलाकर उन से कहा, जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आपे से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले।
- 35 क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा।
- 36 यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?

3. लूका 12: 16-22, 30 (तुम्हारा)-32

- 16 उस ने उन से एक दृष्टान्त कहा, कि किसी धनवान की भूमि में बड़ी उपज हुई।
17 तब वह अपने मन में विचार करने लगा, कि मैं क्या करूं, क्योंकि मेरे यहां जगह नहीं, जहां अपनी उपज इत्यादि रखूं।
18 और उस ने कहा; मैं यह करूंगा: मैं अपनी बखारियां तोड़ कर उन से बड़ी बनाऊंगा;
19 और वहां अपना सब अन्न और संपत्ति रखूंगा: और अपने प्राण से कहूंगा, कि प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिये बहुत संपत्ति रखी है; चैन कर, खा, पी, सुख से रह।
20 परन्तु परमेश्वर ने उस से कहा; हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा: तब जो कुछ तू ने इकट्ठा किया है, वह किस का होगा?
21 ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिये धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं॥
22 फिर उस ने अपने चेलों से कहा; इसलिये मैं तुम से कहता हूं, अपने प्राण की चिन्ता न करो, कि हम क्या खाएंगे; न अपने शरीर की कि क्या पहिनेंगे।
30 ...तुम्हारा पिता जानता है, कि तुम्हें इन वस्तुओं की आवश्यकता है।
31 परन्तु उसके राज्य की खोज में रहो, तो ये वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएंगी।
32 हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दे।

4. मरकुस 12: 28-34 (से 1st.)

- 28 और शास्त्रियों में से एक ने आकर उन्हें विवाद करते सुना, और यह जानकर कि उस ने उन्हें अच्छी रीति से उत्तर दिया; उस से पूछा, सब से मुख्य आज्ञा कौन सी है?
29 यीशु ने उसे उत्तर दिया, सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है; हे इस्राएल सुन; प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है।
30 और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।
31 और दूसरी यह है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना: इस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।
32 शास्त्री ने उस से कहा; हे गुरु, बहुत ठीक! तू ने सच कहा, कि वह एक ही है, और उसे छोड़ और कोई नहीं।
33 और उस से सारे मन और सारी बुद्धि और सारे प्राण और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना और पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना, सारे होमों और बलिदानों से बढ़कर है।
34 जब यीशु ने देखा कि उस ने समझ से उत्तर दिया, तो उस से कहा; तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं॥

5. प्रेरितों के काम 4: 32

- ³² और विश्वास करने वालों की मण्डली एक चित्त और एक मन के थे यहां तक कि कोई भी अपनी सम्पत्ति अपनी नहीं कहता था, परन्तु सब कुछ साझे का था।

6. रोमियो 13: 1

- ¹ हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के आधीन रहे; क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर स न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 9: 17-24

क्या आप "अपने भगवान को अपने प्रभु और अपने सभी प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखते हैं"? इस आदेश में बहुत कुछ शामिल है, यहां तक कि सभी भौतिक संवेदना, स्नेह और पूजा का समर्पण भी। यह ईसाई धर्म का एल डोराडो है। इसमें जीवन का विज्ञान शामिल है, और केवल आत्मा के दिव्य नियंत्रण को मान्यता देता है, जिसमें आत्मा हमारा स्वामी है, और भौतिक अर्थ और मानव का कोई स्थान नहीं होगा।

2. 60: 29-6

आत्मा के पास आत्मा को प्राप्त करने के लिए अनंत संसाधन हैं, और खुशी अधिक आसानी से प्राप्त की जाएगी और हमारे रखने में अधिक सुरक्षित होगी, अगर आत्मा में मांग की जाए। अकेले उच्च आनंद अमर आदमी के लालसा को संतुष्ट कर सकते हैं। हम व्यक्तिगत समझदारी की सीमा के भीतर खुशी का संचार नहीं कर सकते। इंद्रियां वास्तविक आनंद नहीं देती हैं।

मानव के हित में अच्छाई बुराई पर अध्यात्म और पशु पर आधिपत्य होना चाहिए, या सुख कभी नहीं जीता जाएगा।

3. 61: 9-11

पाप की हर घाटी को ऊंचा किया जाना चाहिए, और स्वार्थ के हर पहाड़ को नीचे लाया जाना चाहिए, ताकि विज्ञान में हमारे भगवान का राजमार्ग तैयार हो सके।

4. 30: 19-3

सत्य के व्यक्तिगत आदर्श के रूप में, ईसा मसीह सत्य और जीवन के तरीके को इंगित करने के लिए, सभी गलतियों, बीमारी, और मृत्यु - को रबिनिकल त्रुटि और फटकार के लिए आया था। आत्मा और भौतिक अर्थ, सत्य और त्रुटि के बीच अंतर दिखाते हुए, इस आदर्श को यीशु के संपूर्ण सांसारिक जीवन के दौरान प्रदर्शित किया गया था।

यदि हमने आत्मा को नियंत्रण रखने की अनुमति देने के लिए भौतिक अर्थों की त्रुटियों पर पर्याप्त रूप से विजय प्राप्त की है, तो हम पाप को कम कर देंगे और हर परिस्थिति में उसे फटकार देंगे। केवल इस तरह से हम अपने दुश्मनों को आशीर्वाद दे सकते हैं, हालांकि वे हमारे शब्दों को नहीं समझ सकते। हम अपने लिए नहीं चुन सकते हैं, लेकिन यीशु द्वारा सिखाए गए तरीके से हमारे उद्धार का काम करना चाहिए। नम्रता और पराक्रम में, वह गरीबों को सुसमाचार का प्रचार करते हुए पाया गया। अभिमान और भय सत्य के मानक को सहन करने के लिए अयोग्य हैं, और ईश्वर इसे कभी भी ऐसे हाथों में नहीं सौंपेगा।

5. 262: 9-16

हम नश्वर विश्वास के उथलेपन में गोता लगाकर ईश्वर की रचना की प्रकृति और गुणवत्ता को थाह नहीं दे सकते। हमें जीवन में सत्य और भौतिकता को खोजने के अपने अथक स्पंदन को उलट देना चाहिए - और ईश्वर के अमर विचार के लिए नश्वर से ऊपर, भौतिक इंद्रियों की गवाही से ऊपर उठना होगा। ये स्पष्ट, उच्च विचार भगवान-जैसे मनुष्य को उसके अस्तित्व के पूर्ण केंद्र और सीमा तक पहुंचने के लिए प्रेरित करते हैं।

6. 214: 28-3

न तो उम्र और न ही दुर्घटना आत्मा की इंद्रियों में हस्तक्षेप कर सकती है, और कोई अन्य वास्तविक इंद्रियां नहीं हैं। यह स्पष्ट है कि पदार्थ के रूप में शरीर की अपनी कोई संवेदना नहीं है, तथा आत्मा और उसकी शक्तियों के लिए कोई विस्मृति नहीं है। आत्मा की इंद्रियाँ दर्द रहित हैं, और वे हमेशा शांति में रहती हैं। उनसे सभी चीजों के सामंजस्य और सत्य की शक्ति और स्थायित्व को कोई छिपा नहीं सकता।

7. 311: 7-8 (सं.), 14-25

अंतर मन अमर है क्योंकि यह आत्मा है, जिसमें आत्म-विनाश का कोई तत्व नहीं है।

आत्मा के झूठे अनुमानों के माध्यम से भावना और मन में निवास के रूप में सामग्री में विश्वास, अस्थायी नुकसान या आत्मा की अनुपस्थिति, आध्यात्मिक सत्य की भावना में संघर्ष करता है। त्रुटि की यह स्थिति जीवन और पदार्थ में मौजूद पदार्थ के रूप में जीवन का नश्वर सपना है, और होने की अमर वास्तविकता के सीधे विपरीत है। जब तक हम मानते हैं कि आत्मा पाप कर सकती है या वह अमर आत्मा नश्वर शरीर में है, हम विज्ञान के होने को कभी

नहीं समझ सकते। जब मानवता इस विज्ञान को समझती है, तो यह मनुष्य के लिए जीवन का नियम बन जाएगा, - यहां तक कि आत्मा का उच्च नियम, जो सद्भाव और अमरता के माध्यम से भौतिक अर्थों पर हावी है।

8. 58: 7-12

निःस्वार्थ महत्वाकांक्षा, महान जीवन-उद्देश्य और पवित्रता - विचार के ये घटक मिलकर व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से सच्ची खुशी, शक्ति और स्थायित्व का निर्माण करते हैं।

आत्मा में नैतिक स्वतंत्रता है।

9. 265: 31-5

अर्थ की वेदनाएँ नमस्कार हैं, यदि वे झूठे सुखदायक विश्वासों को मिटा देते हैं और भावनाओं को आत्मा से आत्मा तक पहुँचाते हैं, जहाँ ईश्वर की रचनाएँ अच्छी हैं, "हृदय को आनन्दित करता है।" यह विज्ञान की तलवार है, जिसके साथ सत्य त्रुटि को नष्ट करता है, भौतिकता मनुष्य के उच्च व्यक्तित्व और भाग्य को स्थान देती है।

10. 224: 28-4

सत्य स्वतंत्रता के तत्वों को लाता है। इसके बैनर पर आत्मा से प्रेरित आदर्श वाक्य है, "गुलामी को समाप्त कर दिया गया है।" भगवान की शक्ति कैद में उद्धार लाता है। कोई भी शक्ति दिव्य प्रेम का सामना नहीं कर सकती। यह कौन सी शक्ति है, जो स्वयं ईश्वर का विरोध करती है? यह किसके साथ आता है? वह कौन सी चीज है जो मनुष्य को पाप, बीमारी और मृत्यु के लिए लोहे की छड़ से बांधती है? जो कुछ भी मनुष्य को गुलाम बनाता है वह ईश्वरीय सरकार का विरोध करता है। सत्य ही मनुष्य को मुक्त बनाता है।

11. 125: 12-20

जैसे-जैसे मानव विचार एक अवस्था से दूसरे चरण में बदलता है, दर्द और दर्द रहितता, दुःख और आनन्द, - भय से आशा और विश्वास से समझ तक, - दृश्य अभिव्यक्ति अंतिम रूप से मनुष्य द्वारा शासित होगी, भौतिक अर्थ से नहीं। भगवान की सरकार को दर्शाते हुए, मनुष्य स्व-शासित है। जब दिव्य आत्मा के अधीन होते हैं, तो मनुष्य को पाप या मृत्यु से नियंत्रित नहीं किया जा सकता है, इस प्रकार स्वास्थ्य के नियमों के बारे में हमारी सामग्री सिद्ध होती है।

12. 310: 14 (विज्ञान)-18

विज्ञान आत्मा को ईश्वर के रूप में प्रकट करता है, पाप और मृत्यु से अछूता, — केंद्रीय जीवन और बुद्धिमत्ता के रूप में जिसके चारों ओर मन की प्रणालियों में सामंजस्यपूर्ण रूप से सभी चीजें हैं।

आत्मा नहीं बदलती।

13. 322: 3-7

जब एक सामग्री से आध्यात्मिक आधार पर जीवन और बुद्धिमत्ता के दृष्टिकोण को बदलते हैं, हम जीवन की वास्तविकता प्राप्त करेंगे, आत्मा का नियंत्रण और हम अपने ईश्वरीय सिद्धांत में ईसाई धर्म या सत्य का अनुभव करेंगे।

14. 590: 1-3

स्वर्ग के राज्य। दिव्य विज्ञान में सामंजस्य की प्रबलता; अनियंत्रित, शाश्वत और सर्वशक्तिमान मन के दायरे; आत्मा का वातावरण, जहाँ जीवाश्म सर्वोच्च है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को

प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6